

ખુશહાલપુર બૈક કોલોની મેં નાલે મેં ગિરી ગાય, રેસ્ક્યુ કર બચાઈ જાન



ગિરી ગાય કો નિકાલને કે લિએ રેસ્ક્યુ અધિયાન કરી શકુણાની કો શુરૂઆત હુદ્ડી, ઘંટો તક નિગમ કર્મી નાલ મેં ઉત્તરક ગાય કો પ્રયાસ કરતે હોય, કિન્તુ ગર્દ નાલ કારણ કરી શકુણાની કો શુરૂઆત હોય, સ્થાનીય લોગો ને નિગમ કર્મી ટીમ ને રેસ્ક્યુ અધિયાન ચલાકર જેસીઓ કો મદર સે કંઈ મશવકત કે બાદ સકુશાળ બાહ્ય નિકાલા.

તેજ રફતાર ડંપર કી ટકકર સે ભર્ફી-બહન ધ્યાય

બાંધુદાના। તેજ રસાયન ડંપર કી ટકકર લોગો સે બાદક સંક્રમ પર ગાઈ જિસમે દોનો ખેડી બનાડું સંક્રમ પર રિસ્કર ઘાલી હો ગઈ. હારોની કો સંક્રમ સે વાની ઘાલીની કો સંક્રમ કો આર્થિક ઘાલી કો હુદ્ડી કો લિએ અધિયાન કરી શકુણાની કો સંક્રમ પર ગાઈ કો નિગમ કર્મી ટીમ ને રેસ્ક્યુ અધિયાન ચલાકર જેસીઓ કો મદર સે કંઈ મશવકત કે બાદ સકુશાળ બાહ્ય નિકાલા.

धर्मांतरण कानून पर नोटिस

धर्मान्तरण कानून को लेकर देश की सर्वोच्च अदालत में सुनवाई चल रही है। मंगलवार को धर्मान्तरण से जुड़े कानूनों पर सुप्रीम कोर्ट ने आठ राज्यों को नोटिस जारी किया है और इसका जवाब चार हफ्ते में दाखिल करने को कहा है। उप्र, मध्य प्रदेश, हिमाचल, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, झारखण्ड और कर्नाटक में बने धर्मान्तरण कानूनों को चुनौती देने वाली याचिकाएं दायर की गईं। इन्हीं याचिकाओं पर मुख्य न्यायाधीश बीआर गवर्नर और जस्टिस के विनाद चंद्रन की बीच सुनवाई कर रही थी। याचिका कर्त्ताओं ने कोर्ट को बताया कि भले ही इन कानूनों को फ्रीडम ऑफ रिलाइजन एक्ट कहा जाता है लेकिन यह अल्पसंख्यकों की धार्मिक स्वतंत्रता पर रोक लगाते हैं। असल में जिस तरह की कठोरता धर्मान्तरण कानूनों को लेकर बती गई है वह बिल्कुल भी व्यवहारिक नहीं है। इसलिए धर्मान्तरण कानूनों को लेकर एक पक्ष विशेषकर अल्पसंख्यक समाज जरा भी सहज नहीं है, बिल्कुल वह यह अंदेशा बार-बार सार्वजनिक रूप से जाहिर होती है कि इस कानून द्वारा एक समुदाय विशेषकर मुस्लिम समुदाय के लोगों का उत्पीड़न होगा। जिस तरह के प्रवाधन धर्मान्तरण कानून में किए गए हैं, इससे उनकी आशकाओं की पुष्टि भी होती है। जैसाकि सीनियर एडवोकेट चंद्र उदय सिंह ने अदालत में दीलील भी दी कि यूपी में 2024 में धर्मान्तरण से संबंधित कानून संशोधित कर सजा 20 साल से लेकर आजीवन कारावास तक कर दी गई है। उदय सिंह का कहना था कि जमानत की शर्तें भी कठोर कर दी गईं और तीसरे पक्ष को शिकायत दर्ज करने का अधिकार दे दिया गया। उनका कहना था कि इससे चर्च की प्रार्थनाओं या इंटरफेर मैरिज में शामिल लोगों को भी भीड़ और संगठनों की ओर से उत्पीड़न ज्ञेलन पड़ रहा है। अधिवक्ता ने याद दिलाया कि इस मामले में एससी ने 2020 में नोटिस जारी किया था, बाद में जमीनत उलेमा हिन्द ने कोर्ट से मार्ग की कि छह हाईकोर्ट में चल रही 21 याचिकाओं को सुप्रीम कोर्ट में ही लाया जाए। वर्तमान में गुजरात और मध्य प्रदेश में इस कानून की कुछ धाराओं पर रोक जरूरी है। अब सरकारें चार सप्ताह में क्या जवाब देंगी, यह तो बाद में पता चलेगा, लेकिन इससे एक बात साफ है कि धर्मान्तरण कानून में जिसको फ्रीडम ऑफ रिलाइजन एक्ट कहा जाता है। इस तरह की खामियां हैं, जिससे

अल्पसम्बन्धका का धारामक स्वतंत्रता पर राक लगता है। पाठ क सामने वरिष्ठ वकील इंदिरा जय सिंह, संजय हंगड़े, एमआर शमशाद, संजय पारिख समेत अन्य पक्षकारों ने भी अपनी दलील रखी। वेरे सात्सव में देखा जाए तो इस तरह का कानूनों का विभिन्न समाज वाले देखा में कोई औचित्य नहीं है। इसके पीछे देखा जाए तो राजनीति मुख्य कारण है। धर्मान्तरण कानून लाया भी उन्हीं रजन्यों में गया है, जहां भाजपा की सरकारें हैं। जो इस बात की तरफ इशारा करती है कि धर्मान्तरण को लेकर केवल भाजपा को ही समस्या है, अन्य सरकारों को नहीं। निसदेह अगर कहीं कोई बलपूर्वक या घट्यंत्रकारी तरीके से धर्मान्तरण में शामिल होता है तो उसके खिलाफ कारबाई होनी ही चाहिए और उसके लिए हमारे पास पहले से ही कानून हैं, लेकिन यह पक्षपातपूर्ण तरीके से नहीं होना चाहिए।

सफेद नेज पर सफेद झूट बोला जा रहा



भा रत, हुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जहां संवाद और विमर्श लोकतंत्र की रीढ़ माने जाते हैं। वहां आज टीवी बहसें एक ऐसा मंच बन चुकी हैं जहां तर्क की जगह एक दूसरे का अपमान, चोखा-पुकार और राजनीतिक दुष्प्रचार हावी हो गया है। प्राइम टाइम के इन शो में विभिन्न राजनीतिक लोगों के प्रवक्तव्य एक-दूसरे पर व्यक्तिगत हमले करते नजर आते हैं, जिससे बहसें निष्पक्षीहीन हो जाती हैं। यह न केवल दर्शकों के समय की बर्बादी है, बल्कि इन राजनीतिक ध्वनीकरण को बढ़ावा देने वाला एक खतरनाक माध्यम भी बन गया है। प्रवक्तव्यों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली अपमानजनक भाषा ने टीवी डिवेलपमेंट को एक सर्कंस का रूप दे दिया है। चेनल और एंकर ऐसे निरथक बहसों को बढ़ावा देते हैं? क्या यह टीआरपी की

होड़ है या राजनीतिक दबाव?

टीवी बहसों का इतिहास भारत में 1990 के दशक से जुड़ा है, जब निजि चैनलों का आगमन हुआ। शुरू में प्र० बहसों मुद्दों पर शोधावकर चर्चा का माध्यम थीं, लेकिन अजाव वे एक शोरगुल भरी जंग बन चुकी हैं। विभिन्न अध्ययनों और रिपोर्टों से स्पष्ट है कि भारतीय टीवी डिवरेंट्स में आक्रमकता और विषाक्त भाषा का स्तर चिताजनक रूप से बढ़ा है। एक शोध के अनुसार, बहसों में ऐकरें द्वारा आक्रमक लहजे का इस्तेमाल 80 प्रतिशत से अधिक होता है, जो शर्कों पर नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालता है। एक अड्के बताते हैं कि बहसों अब सचुना का स्रोत नहीं, बल्कि प्रचार का हथियार बन चुकी हैं।

An illustration of two men standing behind blue podiums on a stage. The man on the left has a beard and is wearing a dark suit with a yellow tie. He is gesturing with his hands while speaking. The man on the right is wearing a purple suit with a yellow tie and has his arms raised in a gesture. There are microphones and video cameras on tripods in front of them. The background shows a city skyline at night.

राजनीतिक दलों के प्रवक्ताओं द्वारा अपमानजनक भाषा का उपयोग इस समस्या का केंद्रीय बिंदु है। एक बहस के दौरान एक राष्ट्रीय पार्टी के प्रवक्ता को दूसरी पार्टी के प्रवक्ता द्वारा 'जयचंद' और 'गहरा' कहा गया, जिसे सुनकर उस प्रवक्ता को हार्ट अटैक हुआ और उनकी मृत्यु हो गई। यह घटना टीवी डिवर्टमेंट की विश्वासिता का जीता-जागता उदाहरण है। इसी तरह अन्य प्रवक्ता ने एक 'झूसरे प्रवक्ता' को 'नाली का कीड़ा', 'दारा माँ', 'वैपं' कहा था। 'टीला टांग दंगा' जैसे शब्दों का प्रयोग करते पाए गए हैं। एक प्रवक्ता ने तो दरवाजे के बाहर दामे परवाना करते ही उसे दिया-

बहस के दौरान दूसरे प्रवक्ता पर हाथ था उठा दिया।
यह समस्या बढ़ रही है कम नहीं हुई। मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ में एक टीवी बहस के दौरान एक नेता पर सामग्रा बन गई है। दर्शक भागते हैं, ले हैं। दूसरा कारण राज

पाकिस्तान की तरह शिक्षा को जहरीला बनाने की कोशिश



ਪਵਨ ਸਿੰਘ

धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों के प्रति विद्वेष्पूण् और भड़काऊ शिक्षा दी जा रही है। पाकिस्तान के शिक्षकों को पूरी रह दे से सम्प्रदायिक कर दिया गया है। यह शिक्षक गैर मुस्लिमों को इस्लाम के दुरुपयन मानते हैं। एक अध्ययन अमेरिकी सरकार से जुड़े एक मिशन द्वारा किया गया था जिसके अनुसार पाकिस्तान में कट्टर इस्लाम के नाम पर जहर का बीज बोया जा रहा है। 9/11 हमले के बाद पूरी दुनिया का ध्यान स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली टैक्स्ट बुक की ओर गया। खासकर सऊदी अरब और पाकिस्तान की स्कूली किताबों की ओर। अमेरिका ने काफी दबाव डालकर सऊदी अरब की स्कूली किताबों की कोटी टैक्स्ट बदलवाए, सेक्रिन पाकिस्तान में बह एस न कर सका। पाक स्कूलों की शिक्षा आतंकियों के प्रति सहानुभूति की बदल बन रही है। यूएस कमीशन आन इंटरनेशनल रिलियजिस प्राइडम के चेयरमैन लेनार्ड लियो ने पिछले दिनों एक बयान में कह था, पाकिस्तान में हालात लगातार खराब हो रहे हैं सरकारों के लगातार कमज़ोर होने से कट्टुल्लाघात को प्रत्रय मिल रहा है। सर्वे में पाकिस्तान के चारों प्रतांत्रों के साथ सेलेक्ट बदल की सौ से ज्यादा पाठ्यपुस्तकों के अध्ययन किया गया। पाठ्यपुस्तकों के इस्लामीकरण तानाशाह जनरल जिया उल हक के दौरान शुरू हुआ था। इसके बाद किताबों में पढ़ाया जाने लगा कि हिंदुओं की संस्कृति और सामाजिक अन्याय और क्रूरता पर आधारित है। जबकि इस्लाम शार्त और भाईचारे का संदेश देता है। देश की सबसे ज्यादा आवादी वाले पंजाब प्रांत में कक्षाचार की सामाजिक अन्याय की किताबों में लिखा है कि मुस्लिम विराटी ताकतें दुनिया से इस्लाम के वर्सस्व को खत्म करने में लगी हैं। पाकिस्तान इतिहास के नायकों में मोहम्मद गजनवी का खास महिमामंडित किया गया है, जिसने 1029 ईस्वी के आसपास सोमानाथ मरिंदर को तोड़ा था। आज इन्हीं सब शिक्षाओं का नतीजा है कि पाकिस्तान दुनिया का तीसरा असहिष्णु देश बन चुका है इसी शिक्षा का परिणाम यह हुआ कि पाक में मार्दिंग, गुरुद्वारों और चर्चों पर हमले, तोड़फोड़ और

वनमानुष पूर्णिमा ने यह क्षमता हासिल कर ली थी, इसका प्रमाण 2015 में 18 प्रायमेट प्रजातियों के एक मनुष्य, चिम्मेजी तथा गोरिल्ला में एक ऐसा पाया जाता है जो अल्कोहल पचाने वाले की कार्यक्षमता को 40 गुना बढ़ा देता है और से अन्दर लगा था कि यह उत्परिवर्तन करीब साल पहले हुआ था, लेकिन इस बाबत आंकड़े नहीं थे कि क्या हमारे वानर पूर्वज पर्यावरण मात्रा वत खाद्य परार्थ का भक्षण करते थे। परोक्ष के आधार पर तो 40 प्रजातियों के भोजन में यह से भी कम था। शोधकार्ताओं का विचार था कि वान वास्तविकता से थोड़ा कम है क्योंकि इसमें थोड़ा शामिल है किया गया है जो किण्वन की अवस्था में खाए जाते हैं। शोधकार्ताओं को एक आइडिया सुझा। उन्होंने क्या कि यदि वे गिरे हुए फलों पर ध्यान केन्द्रित हत अनुमान मिल सकता है। मैदानी रिपोर्ट्स में ह जरूर बताया जाता है कि जानवर क्या खा रहे त्राते समय में कितनी ऊँचाई पर थे। यानी उस पेड़ पर बैठे थे या जमीन पर। इसके आधार पर और अनुमान लगाया कि कितनी बार ए यानी एप्स जमीन से फल उठाकर खाते हैं। ने स्क्रिप्टिंग की संज्ञा दी यानी गिरे हुए फल करना। इन गिरे हुए फलों को किण्वन की अवस्था में माना गया। अब इस नई परिभाषा को

कर डार्टमाउथ कॉलेजे के मानव वैज्ञानिक नाथेनियल एमीनी और उनके साथियों ने चार प्रायमेट्र प्रजाति आवादियों के पहले से उपलब्ध अंकड़ा को एक बार लें तो से टटोला-बोरिंयों के ओरांगुटान, युगांडा के विवर्यें जी और पहांडी गोरिल्ला तथा गैबन के गोरिल्ला। इस गया कि इन चारों आवादियों के भोजन में फलों की तुलना लगभग एक बारबार 15 से 60 प्रतिशत की बीच थी किन गिरे हुए या पेंड से तांडे गए फलों की मात्रा में जोको विविधता थी।

अफ्रीकी एप्स, गोरिल्ला व चिवर्येंजी ने जो फल गिरे उनमें से गिरे हुए फल 25 से 62 प्रतिशत तक थे बकि ओरांगुटान ने ऐसे फल कभी-कभार ही खाए थे। उत्तरवाले हैं कि ओरांगुटान हमारे दूर के रिशेवार हैं और उनमें अल्कोहल का क्षुश्लतापूर्वक पाचन करने के लिए नीरी जेनेटिक उत्परिवर्तन नहीं होता। लिहाजा, परोपकार जानकारी काफी महत्वपूर्ण है। अलबत्ता, कई जानिकों का कहना है कि चंद स्थलों के आंकड़ों के अधार पर निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है। हो सकता है कि प्रवृत्ति चंद आवादियों तक सीमित हो। जैसे हारवर्ड एवं विविदालय के मानव वैज्ञानिक रिचर्ड रैंगहम बताते हैं कि उन्होंने दशकों से युगांडा के जिन चिम्पेर्येंजियों का अध्ययन किया है उनमें गिरे हुए फल के प्रति हिकारत ही रखी है। बहराहल, वे मानते हैं कि इस अध्ययन ने अल्कोहल का क्षुश्लता की ओर जो ध्यान आकर्षित किया है महत्वपूर्ण है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

एक आम लत जो वनमानुष पूर्वजों से मिली

जाब लगता है लाकन शायद यह सच है। यह सही है कि १ करोड़ साल पहले हमारे वानर पूर्वज दाढ़ बनाना तो नहीं जानते थे लेकिन उन्होंने उसका स्वाद खाकर रूप से चख लिया था। बायोसोइन्स में प्रकाशित एक रिपोर्ट इस बात को प्रमाणित करती लगती है। जीव वैज्ञानिक रॉबर्ट डूडले द्वारा प्रस्तुत एक परिकल्पना रही है, शराबखार बंदर, जिसके अनुसार कई लाख साल पहले हमारे वानर पूर्वज गिरे हुए फल खाते थे, जो कुछ हद तक किण्वित हाकर मदिरा से भर गए होंगे। इस अध्ययन के दौरान शोधकर्ताओं ने इस प्रवृत्ति को एक अच्छा सा नाम भी दे दिया है—स्क्रिप्टिंग (फलकोरी)।

वैसे तो किण्वित होते फलों को सूंध लेना काफी आसान है। जब फलों, पेड़ों से रिस्ते रस या मकरंद पर खामीर पनपता है तो वह अल्कोहल पैदा करता है। कई जानवर और पक्षी इसका सेवन करके थाढ़े धूत तो हो जाते हैं और फिर मनुष्यों ने लगभग 8000 साल पहले फलों से और अनाज से शराब बनाना सीख लिया था। तो हो सकता है कि हमारे पूर्वजों ने प्राकृतिक रूप से बनती शराब को खाया हो। दरअसल, यदि वे ऐसे किण्वित होते फलों को खाने लगते तो उन्हें अन्य जंतुओं से प्रतिष्ठायी में लाभ मिलता क्योंकि अन्य जंतु इन्हें नहीं खाते। और तो और, ऐसे फलों को उनकी हवा में फैलती गंध की मदद से रुद्र से ताड़ लेना भी आसान रहा होगा।



विनीत नारायण

स्थिति सुधर सकती है। लेकिन टीआरपी और राजनीतिक लाभ के लालच में वे अनदेखी करते हैं।

समाधान के लिए बहुआयामी प्रयास जरूरी हैं। सबसे पहले, राजनीतिक दलों को प्रवक्ताओं के चयन में सुधार करना चाहिए। केवल अनुभवी और सच्चितयों को ही टीवी पर भेजा जाए। दूसरा, “ट्राई” और सच्चाना मत्रालय को सख्त नियम लागू करने चाहिए, जैसे अपमानजनक भाषण पर तकात जुर्माना लगा। तीसरा, दर्शकों को जागरूक होना चाहिए वे ऐसे विनेलों का विहिषण करें जो सनसनी फैलते हैं। चौथा, उत्तरत्र मीडिया वॉर्चाडगा को मजबूत बनाना चाहिए। अंत में, डिजिटल प्लेटफॉर्म्स जैसे यूट्यूब पर तथ्यपक्ष वहसें बढ़ावा दें, जहां सोशल मीडिया इंगेजमेंट

भारत की टीवी बहसें लोकतंत्र का मजाक बन चुकी हैं। अपमानजनक प्रवक्ताओं का बोलबाला न केवल बहसों को निरर्थक बनाता है, बल्कि समाज को विभाजित करता है। चैनल और एंकरों को याद वास्तव में प्रतिकरिता का सम्पादन करना है, तो उन्हें टीअरपी के पीछे भागना छोड़कर जिम्मेदार संवाद को प्राथमिकता दी जावी। अन्यथा, यह बहसें लोकतंत्र की जड़ों को खोखला करती रहेंगी। समय आ गया है कि हम इस एस मीडिया की मांग करें जहां तर्क जीते, न कि अपमान। केवल तभी भारत का लोकतंत्र मजबूत होगा। (ये लेखक के निजी विचार हैं)

